



**Most Trusted Learning Platform**

**CURRENT AFFAIRS  
DISCUSSION**



❖ भू-आधार

ULPIN

- यह भूमि पार्सल के देशांतर और अक्षांश निर्देशांक का उपयोग करके उत्पन्न 14-अंकीय अल्फा-न्यूमेरिक अद्वितीय आईडी है।
- यह विस्तृत सर्वेक्षणों और भू-संदर्भित भूकर मानचित्रों पर आधारित है।
- कैडस्ट्रल मानचित्र, जिसे भू नक्शा भी कहा जाता है, डिजिटल भूमि रिकॉर्ड हैं जो भूमि पार्सल की सीमाओं को दर्शाते हैं।
- इसमें ग्रामीण और शहरी सभी भूमि भूखंड शामिल होंगे।
- यह भूमि अभिलेख विभाग की एक पहल है और इसे डिजिटल इंडिया भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम (डीआईएलआरएमपी) के हिस्से के रूप में कार्यान्वित किया जा रहा है।
- यह 100 प्रतिशत केन्द्र पोषित योजना है।
- अब तक, ULPIN को 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पहले ही शुरू किया जा चुका है







## ❖ **Bhu-Aadhaar**

- **It is a 14-digit alpha-numeric unique ID generated using the longitude and latitude coordinates of the land parcel.**
- **It is based on detailed surveys and geo-referenced cadastral maps.**
- **Cadastral maps, also known as Bhu Naksha, are digital land records that show the boundaries of land parcels.**
- **It will cover all land parcels — rural as well as urban.**
- **It is an initiative of the Department of Land Records and is being implemented as part of the Digital India Land Records Modernisation Programme (DILRMP),**
- **It is a 100 per cent centrally funded scheme.**
- **So far, ULPIN has already been rolled out in 26 states and Union territories**



## ❖ कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय कोष (आईएफएडी)

- यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था है
- यह विकासशील देशों में गरीबी और भुखमरी को मिटाने के लिए काम करता है।
- IFAD ग्रामीण गरीबी उन्मूलन पर ध्यान केंद्रित करता है, गरीब ग्रामीण आबादी के साथ काम करता है:
  - गरीबी, भुखमरी और कुपोषण को दूर करें
  - उनकी उत्पादकता और आय बढ़ाएँ
  - उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करें
- यह 1974 के विश्व खाद्य सम्मेलन में अपनाए गए संकल्प का परिणाम है।
- IFAD रोम, इटली में स्थित है और संयुक्त राष्ट्र विकास समूह का सदस्य है।
- इसमें भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका सहित 177 सदस्य देश हैं
- इसने हाल ही में निजी क्षेत्र और छोटे पैमाने के उत्पादकों (ईएलपीएस) के बीच उन्नत संबंध पहल शुरू की है।
- यह विकासशील देशों में छोटे कृषि उत्पादकों और जापान और अन्य जगहों पर व्यवसायों के बीच सहयोग की सुविधा प्रदान करेगा



## ❖ **International Fund for Agricultural Development (IFAD)**

- **It is a United Nations special agency and international financial institution**
- **It works to eradicate poverty and hunger in developing countries.**
- **IFAD focuses on rural poverty reduction, working with poor rural populations to:**
  - **Eliminate poverty, hunger, and malnutrition**
  - **Raise their productivity and incomes**
  - **Improve the quality of their lives**
- **It is a result of resolution adopted at the 1974 World Food Conference.**
- **IFAD is based in Rome, Italy, and is a member of the United Nations Development Group.**
- **It has 177 member states, including India, Pakistan, and Sri Lanka**



- It has recently launched Enhanced Linkages between Private Sector and Small-Scale Producers (ELPS) initiative.
- It will facilitate cooperation between small agricultural producers in developing nations and businesses in Japan and elsewhere



## ❖ संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग

- संदर्भ: भारत को 1 जनवरी, 2024 से शुरू होने वाले चार साल के कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग के लिए चुना गया है।
- इसकी स्थापना 1946 में संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग के तहत की गई थी
- यह संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का एक कार्यात्मक आयोग है।
- यह वैश्विक सांख्यिकीय प्रणाली का सर्वोच्च निकाय है जो दुनिया भर के सदस्य देशों के मुख्य सांख्यिकीविदों को एक साथ लाता है।
- आयोग में संयुक्त राष्ट्र के 24 सदस्य देश शामिल हैं जो समान भौगोलिक वितरण के आधार पर संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद द्वारा चुने जाते हैं।

UNDESA



## **❖ UNITED NATIONS STATISTICAL COMMISSION**

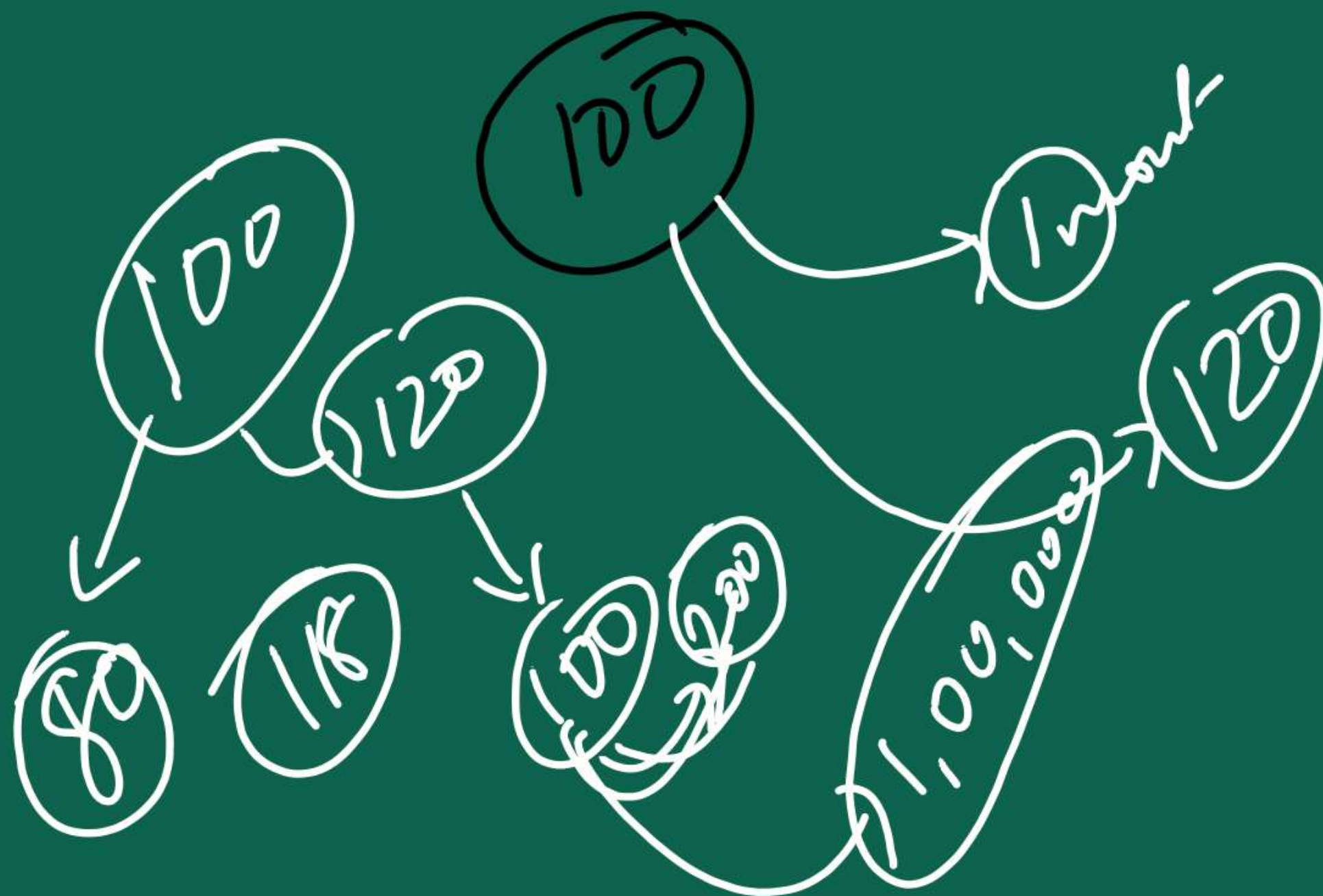
- **Context:** India has been elected to United Nations Statistical Commission for a four-year term beginning January 1, 2024.
- It was established in 1946 under United Nation Department of Economic and Social Affairs
- It is a Functional Commission of the UN Economic and Social Council.
- It is the highest body of the global statistical system bringing together the Chief Statisticians from member states from around the world.
- The Commission consists of 24 member countries of the United Nations elected by the United Nations Economic and Social Council on the basis of an equitable geographical distribution



## ❖ डब्बा ट्रेडिंग ✓

- डब्बा ट्रेडिंग को बॉक्स ट्रेडिंग या बकेट ट्रेडिंग के नाम से भी जाना जाता है।
- यह व्यापार की एक अवैध प्रथा को संदर्भित करता है जो स्टॉक एक्सचेंजों के दायरे से बाहर होती है।
- कुछ व्यापारी और ब्रोकर किसी विशेष स्टॉक का भौतिक स्वामित्व लेने के लिए वास्तविक लेनदेन किए बिना स्टॉक मूल्य आंदोलनों पर दांव लगाते हैं।
- सीधे शब्दों में कहें तो, यह स्टॉक मूल्य आंदोलनों के आसपास केंद्रित जुआ है।
- और, ये सभी डब्बा लेन-देन नकद में तय किए जाते हैं, कोई निशान नहीं छोड़ते।
- व्यापारी भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) के साथ भी पंजीकृत नहीं हैं।
- डब्बा ट्रेडिंग को प्रतिभूति अनुबंध (विनियमन) अधिनियम (एससीआरए), 1956 की धारा 23(1) के तहत अपराध के रूप में मान्यता दी गई है।
- दोषी पाए जाने पर निवेशकों और व्यापारियों को 10 साल तक की कैद या 25 करोड़ रुपये तक का जुर्माना या दोनों का सामना करना पड़ सकता है।







## **What is Dabba Trading?**





## ❖ Dabba trading

- Dabba trading is also known as box trading or bucket trading.
- It refers to an illegal practice of trading that takes place outside the purview of stock exchanges.
- Some traders and brokers bet on stock price movements without incurring a real transaction to take physical ownership of a particular stock.
- Simply put, it is gambling centred around stock price movements.
- And, all these dabba transactions are settled in cash, leaving no trail.
- The traders are not registered with the Securities and Exchange Board of India (SEBI) either.
- Dabba trading is recognised as an offence under Section 23(1) of the Securities Contracts (Regulation) Act (SCRA), 1956.
- Upon conviction, investors and traders can face imprisonment for a term extending up to 10 years or a fine up to Rs 25 crore or both.



## ❖ हरित जमा → Green deposit

- ग्रीन जमा नियमित जमा से बहुत अलग नहीं हैं जो बैंक अपने ग्राहकों से स्वीकार करते हैं।
- एकमात्र बड़ा अंतर यह है कि बैंक हरित जमा के रूप में प्राप्त धन को पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं के लिए अर्जित करने का वादा करते हैं।
- उदाहरण के लिए, एक बैंक यह वादा कर सकता है कि हरित जमा का उपयोग जलवायु परिवर्तन से लड़ने वाली नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए किया जाएगा।
- एक बैंक जीवाश्म ईंधन परियोजनाओं में निवेश करने के लिए हरित जमा का उपयोग करने से भी बच सकता है जिन्हें जलवायु के लिए हानिकारक माना जाता है।
- ग्रीन डिपॉजिट अन्य वित्तीय उत्पादों जैसे कि ग्रीन बांड की एक विस्तृत श्रृंखला में सिर्फ एक उत्पाद है जो निवेशकों को पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ परियोजनाओं में पैसा लगाने में मदद करता है।







## ❑ हरित जमा के लिए आरबीआई फ्रेमवर्क

- यह क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, स्थानीय क्षेत्र बैंकों और भुगतान बैंकों पर लागू नहीं है
- बैंकों को अपने संबंधित बोर्डों द्वारा अनुमोदित नियमों या नीतियों का एक सेट लाना होगा जिनका ग्राहकों से हरित जमा निवेश करते समय पालन किया जाना चाहिए।
- इन नियमों को बैंकों की वेबसाइटों पर सार्वजनिक करने की आवश्यकता है
- बैंकों को प्राप्त हरित जमा की राशि, विभिन्न हरित परियोजनाओं के लिए इन जमाओं को कैसे आवंटित किया गया और पर्यावरण पर ऐसे निवेशों के प्रभाव के बारे में नियमित जानकारी का खुलासा करना होगा।
- एक तीसरे पक्ष को उन परियोजनाओं के संबंध में बैंकों द्वारा किए गए दावों को सत्यापित करना होगा जिनमें बैंक अपनी हरित जमा राशि का निवेश करते हैं और साथ ही इन व्यावसायिक परियोजनाओं की स्थिरता प्रमाण-पत्रों को भी सत्यापित करना होगा।





Renewable  
energy



Pollution  
prevention  
and control



Green  
buildings



Sustainable  
management of  
living natural  
resources  
and land use



Terrestrial and  
aquatic biodiversity  
conservation



Energy efficiency in  
resource utilisation



Clean  
transportation



Climate  
change adaptation



Sustainable  
water and waste  
management





**❖ GREEN DEPOSITS**

- **Green deposits are not very different from the regular deposits that banks accept from their customers.**
- **The only major difference is that banks promise to earmark the money that they receive as green deposits towards environment-friendly projects.**
- **For example, a bank may promise that green deposits will be used towards financing renewable energy projects that fight climate change.**
- **A bank may also avoid using green deposits to invest in fossil fuel projects that are considered harmful to the climate.**
- **A green deposit is just one product in a wide array of other financial products such as green bonds that help investors put money into environmentally sustainable projects.**



## ❑ **RBI Framework for Green Deposits**

- **It is not applicable to Regional Rural Banks, Local Area Banks and Payments Banks**
- **The banks will have to come up with a set of rules or policies approved by their respective Boards that need to be followed while investing green deposits from customers.**
- **These rules need to be made public on the banks' websites**
- **The banks will have to disclose regular information about the amount of green deposits received, how these deposits were allocated towards various green projects, and the impact of such investments on the environment.**
- **A third-party will have to verify the claims made by banks regarding the projects in which the banks invest their green deposits as well as the sustainability credentials of these business projects.**



## ❖ साथी पोर्टल

- यह बीज पता लगाने की क्षमता, प्रमाणीकरण और सूची के लिए एक केंद्रीकृत ऑनलाइन प्रणाली है जिसे बीज उत्पादन, गुणवत्ता वाले बीज की पहचान और बीज प्रमाणीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इसे एनआईसी द्वारा केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सहयोग से 'उत्तम बीज-समृद्ध किसान' की थीम पर विकसित किया गया है।
- यह कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, सरकार की एक पहल है। भारत की।
- पोर्टल का उद्देश्य नकली बीजों की बिक्री पर अंकुश लगाना और किसानों तक गुणवत्तापूर्ण बीज पहुंचाना सुनिश्चित करना है।
- यह कई पीढ़ियों तक संपूर्ण बीज जीवन चक्र को कवर करने के लिए संपूर्ण डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से बीज की गुणवत्ता और शुद्धता को बढ़ाना और सुनिश्चित करना
- कई मॉड्यूल के माध्यम से बीज ट्रेसबिलिटी की मदद से जवाबदेही बढ़ाएं
- मानवीय त्रुटि को कम करके और सिस्टम में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करके बीज प्रमाणीकरण निरीक्षक की ऑन-फील्ड दक्षता में सुधार करें



**❖ SATHI Portal**

- **It is a Centralized Online System for seed traceability, authentication and inventory designed to deal with the challenges of seed production, quality seed identification and seed certification.**
- **It has been developed by the NIC in collaboration with the Union Ministry of Agriculture and Farmers Welfare on the theme of 'Uttam Beej – Samriddh Kisan'.**
- **It is an initiative of the Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare, Govt. of India.**
- **The portal aims to curb the sale of spurious seeds and ensure quality seeds reach farmers.**
- **It will Enhance and ensure the quality and purity of seed through the complete digital platform to cover entire Seed Life Cycle over multiple generations**
- **Increase accountability with the help of seed traceability through multiple modules**
- **Improve the on-field efficiency of Seed Certification Inspector by reducing human error and integrating technology into the system**



## ❖ प्रयाग मंच

- यमुना, गंगा और उनकी सहायक नदियों के वास्तविक समय विश्लेषण के लिए मंच
- यह एक ऑनलाइन डैशबोर्ड है जो नदी के पानी की गुणवत्ता, सीवेज उपचार संयंत्रों और सामान्य अपशिष्ट उपचार संयंत्रों के प्रदर्शन पर नज़र रखता है।
- यह विभिन्न ऑनलाइन डैशबोर्ड के माध्यम से परियोजनाओं और नदी जल की गुणवत्ता की योजना बनाने और निगरानी करने में भी मदद करता है





## ❖ **PRAYAG PLATFORM**

- **Platform for Real-time Analysis of Yamuna, Ganga and their Tributaries**
- **It is an online dashboard that monitors the quality of river water, the performance of sewage treatment plants, and common effluent treatment plants.**
- **It also helps with planning and monitoring projects and river water quality through various online dashboards**



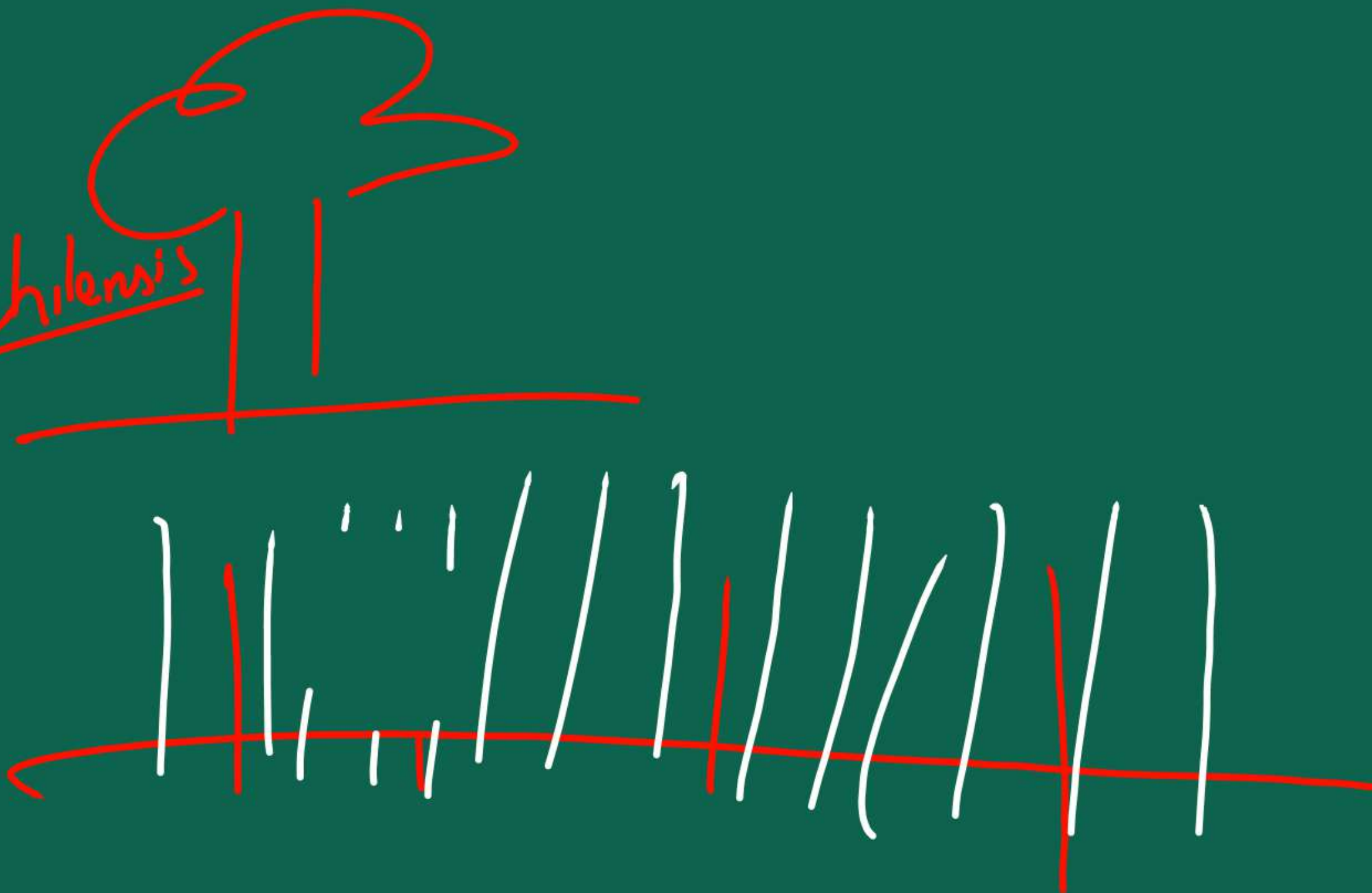
## ❖ समाचार में प्रजातियाँ: प्रोसोपिस चिलेंसिस

- एक विदेशी आक्रामक पौधा मन्नार बायोस्फीयर रिजर्व (जीओएमबीआर) की खाड़ी में 21 द्वीपों में देशी वनस्पति को नष्ट करने का खतरा पैदा कर रहा है।
- यह एक सूखा प्रतिरोधी पौधा है जो चार दक्षिण अमेरिकी देशों - अर्जेंटीना, बोलीविया, चिली और पेरू के शुष्क क्षेत्रों का मूल निवासी है।
- प्रोसोपिस चिलेंसिस को चिली मेसकाइट के नाम से भी जाना जाता है।
- यह एक छोटे से मध्यम आकार का फलदार वृक्ष है जो 12 मीटर ऊंचाई और 1 मीटर व्यास तक बढ़ता है
- अधिकांश द्वीपों के समुद्र तट पर रेत के टीले हैं जिनमें नमक प्रधान पौधों की प्रजातियाँ हैं।
- कुछ द्वीपों पर पेड़ हैं जबकि कुछ द्वीपों के दलदली हिस्से पर मैंग्रोव और संबद्ध प्रजातियाँ हैं



Prosopis chilensis

desi-Red









## ❖ Species in News: **PROSOPIS CHILENSIS**

- **An alien invasive plant is threatening to pulverise native vegetation across 21 islands in the Gulf of Mannar Biosphere Reserve (GoMBR).**
- **It is a drought-resistant plant native to the arid regions of four South American countries — Argentina, Bolivia, Chile, and Peru.**
- **The Prosopis chilensis is also known as Chilean mesquite.**
- **It is a small to medium-sized legume tree that grows up to 12 m in height and 1 m in diameter**
- **Most of the islands have sand dunes along their coastlines with salt-dominant plant species.**
- **Some of the islands contain trees while the marshy sections of some of the islands are occupied by mangroves and allied species**



### ❖ LIGO-भारत, गुरुत्वाकर्षण-तरंग डिटेक्टर

- लुइसियाना में LIGO और अमेरिका में वाशिंगटन के अलावा यह अपनी तरह का तीसरा डिटेक्टर होगा
- LIGO-इंडिया उनके साथ मिलकर काम करेगा।
- गुरुत्वाकर्षण तरंगों के अध्ययन के लिए भारत-अमेरिका की संयुक्त परियोजना
- न केवल देश, बल्कि दुनिया भर में वैज्ञानिक ज्ञान और खगोल भौतिकी अनुसंधान को बढ़ाने की उम्मीद है।
- हिंगोली जिले में औंधा शहर के पास बनाया जाएगा।
- 2030 तक चालू होने की उम्मीद है।
- विश्व की तीसरी LIGO साइट
- यह दो 4 किमी लंबी वैक्यूम ट्यूबों को संपीडित करता है जो एंटीना की तरह काम करती हैं जो अंतरिक्ष में बड़े पैमाने पर होने वाली घटनाओं, जैसे ब्लैक होल के टकराने के कारण होने वाली गुरुत्वाकर्षण तरंगों का पता लगा सकती हैं।



## ❑ LIGO कैसे काम करता है?

- LIGO मूलतः एक विशाल L-आकार का उपकरण है, जिसकी प्रत्येक भुजा 4 किमी लंबी है। प्रत्येक भुजा एक स्टील वैक्यूम ट्यूब से घिरी होती है जिसे इंटरफेरोमीटर कहा जाता है।
- लेज़र पल्स को प्रत्येक भुजा से शूट किया जाता है और प्रत्येक छोर पर दर्पण से वापस उछाल दिया जाता है। एक डिटेक्टर इन दालों के समय और गति पर नज़र रखता है।
- जब कोई गुरुत्वाकर्षण तरंग डिटेक्टर से होकर गुजरती है, तो स्पंदन समय पर वापस नहीं आएगा। गुरुत्वाकर्षण तरंगों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक इसका और ऐसे अन्य संकेतों का उपयोग कर सकते हैं।
- LIGO अत्यधिक संवेदनशील है और सैकड़ों लाखों प्रकाश वर्ष दूर दूर की आकाशगंगाओं से गुरुत्वाकर्षण तरंगों का पता लगा सकता है।
- उदाहरण के लिए, वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, 2015 में LIGO द्वारा देखी गई पहली गुरुत्वाकर्षण लहर लगभग 1.3 अरब साल पहले दो ब्लैक होल की टक्कर के कारण हुई थी।







- गुरुत्वाकर्षण तरंगें: ऊर्जा से बनी होती हैं और ब्रह्मांड में सबसे विशाल पिंडों से जुड़ी प्रमुख घटनाओं के बाद निकलती हैं, जैसे कि ब्लैक होल का विलय, बड़े सितारों का अपने जीवनकाल के अंत में विस्फोट होना और न्यूट्रॉन सितारों की टक्कर।
- गुरुत्वाकर्षण तरंगें ब्रह्मांड में वस्तुओं की गति के बारे में जानकारी ले जाती हैं।
- यह हमें ब्रह्मांड के इतिहास में पहले से कहीं अधिक गहराई तक देखने की अनुमति देता है
- मूल स्वरूप: गुरुत्वाकर्षण तरंगें ब्रह्मांड के शेष भाग में पदार्थ द्वारा अवशोषित या परावर्तित नहीं होती हैं
- पृथ्वी और गुरुत्वाकर्षण तरंग स्रोत के बीच की वस्तुओं को "देखने" की क्षमता। - इसलिए दूरबीन से बेहतर



**❖ LIGO-India, gravitational-wave detector**

- It will be the third of its kind, other than LIGO in Louisiana and Washington in the U.S.
- LIGO-India will work in tandem with them.
- Joint project of India-US to study gravitational waves
- Expected to enhance scientific knowledge and astrophysics research not just in the country, but the world,
- To be built in Maharashtra's Hingoli district, near the city of Aundha.
- Expected to be operational by 2030.
- Third LIGO site in the world
- Comprises two 4-km-long vacuum tubes that work like antennae which can detect gravitational waves caused by massive events in space, such as black holes colliding



## ❖ How does LIGO work?

- LIGO is essentially a massive L-shaped instrument, with each arm being 4 km long. Each arm encases a steel vacuum tube called an interferometer.
- Laser pulses are shot through each arm and bounced back off a mirror at each end. A detector monitors the timing and movement of these pulses.
- When a gravitational wave passes through the detector, the pulses will not return on time. Scientists can use this and other such signals to study gravitational waves.
- LIGO is highly sensitive and can detect gravitational waves from distant galaxies, hundreds of millions of light years away.
- For instance, the first gravitational wave observed by LIGO in 2015, according to the estimates of scientists, was caused by the collision of two black holes about 1.3 billion years ago.



- **Gravitational Waves:** Are made of energy and are released after major events involving the most massive bodies in the universe, such as the merging of black holes, massive stars exploding at the end of their lifetimes, and the collision of neutron stars.
- Gravitational waves carry information on the motions of objects in the universe.
- It allows us to observe further back into the history of the universe than ever before
- **Original Form:** Gravitational waves are not absorbed or reflected by the matter in the rest of the universe
- **Ability to “see through”** objects between Earth and the gravitational wave source. – Hence better than telescopes





# KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

**THANKS FOR WATCHING**

